

DPN 6129

Title : रुद्रयामले दक्षिणकाली कवच RUDRAYĀMALE DAKṢINAKĀLĪ
KAWACA

Run. No. 6820

Cat. No.

Micro. No.

Subject कवच Hymn

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 20 X 6.3

Folios 14

Lines (in a page) 5

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS करमुगमें च रत्ने सदे ५२२/१२२

Ruler / place

पशुपतिमान पःमाय
Paśupati mān Pah māy

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

* श्रीजय शुभङ्गुरी दक्षिण कालिकायै नमः ॥

□ इति श्री रुद्रयामले दक्षिण कालिका त्रैलोक्य मोहनं नाम कवचः ॥

P.T. 9.

△ करयुग्मंच रत्ने₅बुदे भौम शिवमाघने ॥ लिखित्वा कवचं दत्ते आचार्य धर्मः... ॥



5

0

CMS

5

10

15

20

5

10

5

0

CMS

5

10

15

20





इति जयमुद्रा श्री दत्तात्रेय विद्यामयम् ॥
दत्तसुतं श्रीतिलकानन्दानन्दविद्यामयम्
॥ १ ॥ श्रीनिवासाय ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥
नामसंस्थानी महाविद्यामयं दत्तमुद्रा ॥ २ ॥
अलंकार विजया दत्तमुद्रा दत्तमुद्रा (था)

तिथा ॥ सत्रीयति देवना ॥ यथा ॥ यधर्मताय क ॥ ला कया विना यदा
कमं ग्रीहनि विषया ॥ ४ ॥ दिन त्वा सिन विष्टा निता यमि तद्व्यन ॥
॥ विजलाधी ॥ कववा विधने ॥ ५ ॥ अवाहन गति वायि म
विप्रताय केशवा गी ॥ यथा सुना वा य दिव्या या प्रा कि विमला ता ॥ ६ ॥
सकला देवा ॥ स वनि दु ॥ यथा ॥ यथा तु क व र्च पू ॥ यथा ॥ यथा ॥

॥ ७ ॥ उग्र म द्दि ल कालिका म ॥ उ म य क व र्च म ॥ म हारु व र्च म ॥
दु न्द ॥ यी म गान कालि ॥ अ ध व ता ध र्मा र्थ का म मो का ॥ ८ ॥ य ॥ यो न ॥
॥ ९ ॥ लला ट या तु मां को को न हा ता धि ता म द्या न य म्म स दा या तु को वि
प्र ता सा वे ता पू मा ॥ को को को यो तु म ता ना व र्च म ॥ स वि ता धु र्वा ॥ को को न
द ने या तु न क ता ना धि ता म द्या ॥ १० ॥ को को को यो तु म ता ना व र्च म ॥ स वि ता धु र्वा ॥ को को न

ता॥ १०॥ ॐ क्रीं ह्रीं क्रीं क्रीं स्वाहा मम जिह्वा विना वरुण
पातु ॐ क्रीं क्रीं ह्रीं स्वाहा मम ॥ ११ ॥ तु किं मू किं प्रदा काली छिन्ना विष
मम विता ॥ १२ ॥ अस्माकं न सदा पातु क्रीं क्रीं ह्रीं क्रीं मम मम विता
ना विता विना सर्व सिद्धि प्रदायका ॥ १३ ॥ कलयातु सदा काली
क्रीं क्रीं ह्रीं स्वाहा मम सर्व संपत् प्रदा काली कृवन्ती तस्य स विता ॥ १४ ॥

४॥ ॐ क्रीं ह्रीं क्रीं स्वाहा मम नदयं सदा वरुण वायुना वासिता का
ली ॐ क्रीं मम मम स्व प्रदा ॥ १५ ॥ क्रीं क्रीं ह्रीं क्रीं क्रीं स्वाहा पातु
क्रीं क्रीं सदा मम सर्व सिद्धि प्रदा काली गता ता (थन स विता ॥ १६ ॥
क्रीं क्रीं दक्षिण कालिका क्रीं स्वाहा नारी मम वरुण सिद्धि वृद्धि प्रदा का
ली गुनना स विता पूना ॥ १७ ॥ लीलायातु सदा ह्रीं क्रीं दक्षिण

कालिका गङ्गाधारा विद्या प्रसादात् कथयन्ति ॥ १८ ॥ या त्वं दुर्गा देवी कौंकी
दक्षिण काली कीर्त्तना ॥ धरन्त्या सर्वविद्या सर्ववत्प्रदायका ॥ १९ ॥ कौंकी
कौंकी कालिके कौंकी कीर्त्तना ॥ दादगी च महाविद्या नाथवता र्जिता सदा ॥ २० ॥ या
नृतीया दुर्गा कौंकी कीर्त्तना ॥ दादगी च महाविद्या प्रसादात् सर्ववि
ता ॥ २१ ॥ कौंकी कौंकी कालिक कौंकी कीर्त्तना ॥ दादगी च महाविद्या प्रसादात् सर्ववि

ता सर्वविता ॥ २२ ॥ कौंकी कौंकी कालिक कालिक कौंकी कौंकी गुलिथ पाठुमी दाद
कालिक कौंकी नाथवता ॥ २३ ॥ कौंकी कौंकी कालिक कौंकी कीर्त्तना ॥
खयौ के सदा पाठुये च दली महेश्वरी ॥ २४ ॥ कौंकी कौंकी कौंकी कौंकी कौंकी
कौंकी कीर्त्तना ॥ समष्टि सदा पाठु पाठु लीले बवंश्वरी ॥ २५ ॥ कौंकी कौंकी या
मानि कौंकी कौंकी च मालि ॥ मीमांसा सदा कौंकी कौंकी कालिक ॥ २६ ॥

कीर्त्तकी म विरु म स्ति म जी कू दू स दा व दू । कीर्त्तकी म स दा वा ॥ २० ॥
 दा व दू ॥ २० ॥ दा वि ने य क नी वि शो स र्व ला क षू ड लू ला । म हा म हा म हा म हा वि
 स र्व त लू वू (ग) पि ता ॥ २१ ॥ सूर्य वी (ग) ने ना म न (ग) म न या म द मि ता । ऊ य
 ॥ सूर्य म लू त व लि ना ना व द न च ॥ २२ ॥ वि ली य (ग) न य व द न लू गु ना क षू व
 वा क पि ल न वे मि ष्ट न ने कू त पि वू व न च ॥ ३० ॥ का कू पु य धू व ने व द्वा (ग) न

सूर्य ला म या । सूर्य लू (ग) न कू रू न ला व द्वा ऊ न ऊ दू ना ॥ ३१ ॥ सूर्य ना वा पि ता
 वि शो ऊ ना म लू वि ना मि ती । पू रू वि शो म हा का ली वि शो वा की प्र की र्ति ता ॥
 ३२ ॥ को ली क या लि ती कू ला कू नू कू ला दि ना मि ती । वि प्र चि ता त (था) (ग) प्र प्र
 ला दी का घ स लि यो ॥ ३३ ॥ ती ला घ स व ला का ला मा ग म ड्वा प्र की र्ति ता ।
 ए ता स र्व ख धू रा म लू मा ला वि ह पि ता ॥ ३४ ॥ कू कू का ना द हा स न स र्व प्र

यातु मां सदा। वृक्षादीयातु मां पूष आ। तस्या विष्णवे सदा॥ ३५॥ मां धृवायातु
ग्राम्यं वासुदेवे जलं तथा। को मां वीयातु वायव्यं वरुणा वायवाजिता॥ ३६॥
वा नाही वा रुद्र यातु त्रेमं स्यातां वसिष्ठिका। मूधे दुर्ध यातु कालीया धृष्ट
वृत्र कोलिका॥ ३७॥ जलं कुलं च पाषाणं नयनं राजनं गृहं। मां जं कान्तं ज
लं कान्तं विवादं मनःला तथा॥ ३८॥ न वासुते मम न वपुः स्यात् न च दुःखं च

पश्य रुरु यस्तु सर्वं यातु कालिका॥ ३९॥ तं कुरुति धिवा वचं स्यात् क
नलं यावपि। मां सयं कवत्सु वचं स्यात् सदा कान्तिमयं क॥ ४०॥ दिवा नां पो नि
वा यातु सर्वं यावपि यातु कालिका। सर्वं कालिका यातु कालिका यातु सर्व
दा॥ ४१॥ सयं तं गृहं याति सयं कवत्सु निवर्त्तयिती सर्वं यावपि वनिष्यत्
सगच्छं विवसंति धी॥ ४२॥ ये लोकं माहर्तं नाम कवत्सु ददत्सु। म४ प०

साधक (पञ्च) सर्वकर्मजयातिवितः॥४१॥ मन्त्रधर्मः ॥ १ ॥ सर्वव्यापकः
 वन्धवः। कवचं वन्धुवन्धिकाद्यः पुत्राग्नीकालिले वन्धवः॥४४॥ गो (ग) वा
 क्रतिधरा नृपकामसप्तसदो। वायुपुष्पवलाया (ग) महमन्त्रवर्मग
 ॥४५॥ त्रैलोक्यवल्लि साका त्यापुत्या वा कतिर्यथा। नौजस्युविनिर्मक
 ॥ सर्वरूपसर्वदणकः॥४६॥ अथाह तगतिगति। राय्यादिकसप्तवितः॥

यदहं वृत्ततिर्यकवचं दवइत्यली॥४७॥ त (ग) कान्तलयं तत्त्वतः ॥ १ ॥
 यनाजयधमहातुर्वैविद्यादवन् (ग) त्रैलोक्यं तस्मि॥४८॥ सर्वमैव
 गभूतयथावत्कीवहृदयी। प्रकौक्यादीनिममाति। याम्याहिक ॥ ४ ॥
 वा॥४९॥ तस्यदहं तस्मिन् दत्तिवदुत्तरा। रवदवृष्टा। ग्रहहता। विना
 ययकना। सकिन्नरा॥५०॥ सर्वइत्यप्रना। कि हिंसातः ॥

वीरदहनदहस्यमि नताथयतिगाम्भन॥७१॥ नलाधन
कर्मनकनूतययशयप्रवत्याल्लावालातादिमकनूतगामी॥७२॥
जलहृथकुलायात्रकयक्तिनसंगयशैवकुकिंकथयिष्यामि
सिद्धिमयालरता॥७३॥ नानागगसूरवकुकास्वक्यामिदतीवृजुतामि
खिलापूजयित्वावधनयद्यंगसंगती॥७४॥ मोहनसुहृताकर्त्रमोम

ल्लावाटनकममवालवध्यावमानात्रीवध्यावसुतयुतिनी॥७५॥ क
वावामवाहीवालिलिखित्वाधनयद्यदि॥ तदापूनीलरुसुतयुतिनी
पलितपुत्रि॥७६॥ स्वामितावधनरासापिधनधात्यसमन्वितश
कवचमलात्तायाजयेत्कालिकोमनू॥७७॥ ध्याननकोठिजायनत
स्वविद्यानसिद्धेति॥ यद्यद्यदरुवदृष्टुलाकानांनिन्दिताधुव

ॐ हलाकमहाइश्यायन उजता पुत्रमर्कममंक्रावासाजय

। तस्माद्विद्याहवसिद्धिं सत्यं सत्यं वरानेना य०० दं कवची देवो पु

हाहवता ॥ ७० ॥ हलाय प्रहृष्टाय साधकाय पुकाय न ॥

ॐ तिष्ठान्द्रयाम लंदकिण कालि कोषे लाक साहने नाते का उ

कनयुर्मंवरत्नं सौमलिवसाय कालिखिलाकवर्ज्यदं

कासदायना महाधूमा महावाणी महाभाकविना निनी ॥ महाकाना

महाधोना महाभाया चखवनी ॥ महाकर्म करी न्धामा महेश्वर्यप्रदा

यिनी ॥ महाविषयी विषहा महादूर्गद्वानिनी ॥ महादूर्ग महातला

महाकलागवाहिनी ॥ महासूतली सूरगा महाक्रात्र महामती ॥ महा

महागिगानिया महापुतकनानिनी ॥ महाभीतिमहायुक्तिमहा

महागिगानिया महापुतकनानिनी ॥ महाभीतिमहायुक्तिमहा

महागिगानिया महापुतकनानिनी ॥ महाभीतिमहायुक्तिमहा

महागिगानिया महापुतकनानिनी ॥ महाभीतिमहायुक्तिमहा

महाभयमहाधामनामहादीपनमहा
 महोद्यममहासिद्धिमहागौरवमहाविभक्तमहाप्रोक्षण
 महामुक्तिमहावैभक्तमहासुखमहासन्निधिमहानन्दमहाप्रसन्न
 महाजिह्वामहाशुभा महामाहिमहाप्रभा महामाया महानन्दा
 महाकिर्महाकारि महामाहिमहासक्ति महामाहासमहासुखा

अथ दशमः स्कन्धः ॥ ॥ अथ दशमः स्कन्धः ॥ अथ दशमः स्कन्धः ॥
 वता घीयकिलकालिकादयो मृषीयर्थे अकारु सुहृन्नामया ॥ अहं कविषा ॥
 द्वितीयावर्कः ॥ ॥ आवर्कः चतुर्थः अवर्कः पंचमावर्कः षष्ठमावर्कः सप्तमावर्कः अष्ट
 मावर्कः नवमावर्कः दशमावर्कः ॥ ॥ पंचदशमावर्कः ॥ ॥ विंशतिमावर्कः ॥ ॥ पंच
 विंशतिमावर्कः ॥ ॥ अष्टादशमावर्कः ॥ ॥ अष्टादशमावर्कः ॥

नमो ५ दायर १२ गृह १८ मात
 १ अन्नपति १ धनगति १० यज्ञनिवारण २० कल्याणकाम
 २ आर्यक्रम ८ मंगलत्रय ११ धर्मि २१ उमर २६ सवर्ग
 ३ उद्योग १० सयत्नयनी १५ मर्गा २२ उरु २९ विवर्गनाम
 ४ मित्र १० वृत्त १६ सदाश २३ धर्म
 ५ आयुर्विधि १५ मर्गा १६ नामासिद्धि २४ धर्म
 १६ नमो गति २५ विवर्गनाम



